लगभग सभी मनुष्य प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं, लेकिन व्यक्ति के चरित्र के परीक्षण के लिये, उसे शक्ति प्रदान करके देखिये

मौन से अधिक अधिकार को कोई और चीज मज़बूत नहीं कर सकती

— लियोनार्डो दा विंची

यह कथन शक्ति और चरित्र के बीच गहरे संबंध पर अंतर्दृष्टि डालता है। जब व्यक्ति को शक्ति प्राप्त होती है, तो उसका वास्तविक चरित्र सामने आता है। **प्रतिकूल परिस्थितियों में इंसान अक्सर संयम और धैर्य का प्रदर्शन करता है,** क्योंकि परिस्थितियाँ उसे विवश कर देती हैं। लेकिन जब किसी व्यक्ति को शक्ति मिलती है—चाहे वह **राजनीतिक, आर्थिक, या सामाजिक हो**—तो वही शक्ति उसके चरित्र की असली परीक्षा लेती है।

इस निबंध में, हम इस कथन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करेंगे और यह समझने की कोशिश करेंगे कि कैसे शक्ति चरित्र का परीक्षण करती है, साथ ही इसका **राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन** में क्या महत्त्व है।

शक्ति को सदियों से विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा गया है। यह वह साधन है जो व्यक्ति को अपने निर्णय लेने और उन्हें लागू करने की स्वतंत्रता देता है। परंतु, शक्ति के साथ ज़िम्मेदारी भी आती है। इस बात को बेंजामिन फ्रैंकलिन के प्रसिद्ध कथन से भी समझा जा सकता है:**"बड़ी शक्ति के साथ बड़ी ज़िम्मेदारी आती है।"**

शक्ति किसी व्यक्ति के स्वभाव, नैतिकता और आदर्शों को परखने का माध्यम बनती है। एक व्यक्ति जो साधारण जीवन में **संयमित, विनम्र और नैतिक** हो सकता है, वही शक्ति प्राप्त करने के बाद अहंकारी, लालची, या अनैतिक हो सकता है। शक्ति की प्राप्ति व्यक्ति के भीतर छिपी इच्छाओं और वास्तविक व्यक्तित्व को उज़ागर करती है।

(i) महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का जीवन इस कथन का एक आदर्श उदाहरण है। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से भारत की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष किया। जब उन्हें राजनीतिक और सामाजिक शक्ति प्राप्त हुई, तब भी वे सदैव **सत्य, अहिंसा और विनम्रता के सिद्धांतों** पर अडिग रहे। गांधीजी ने इस शक्ति का उपयोग अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये नहीं, बल्कि समाज और देश के कल्याण के लिये किया। यह उनके उच्च चरित्र का प्रमाण है।

(ii) हिटलर

इसके विपरीत, **एडॉल्फ हिटलर** का उदाहरण दर्शाता है कि **कैसे शक्ति का दुरुपयोग एक व्यक्ति के वास्तविक चरित्र को उज़ागर कर सकता है।** हिटलर ने जर्मनी की सत्ता हासिल की और अपनी शक्ति का उपयोग मानवता के विरुद्ध अत्याचारों के लिये किया। उसका चरित्र एक तानाशाह के रूप में उभर कर सामने आया, जिसने लाखों निर्दोष लोगों की जान ली। यह शक्ति का अत्यधिक दुरुपयोग और उसके चरित्र की नकारात्मकता को दर्शाता है।

राजनीति में शक्ति का विशेष महत्त्व है। राजनीतिक सत्ता न केवल व्यक्ति को नीति निर्माण की शक्ति देती है, बल्कि यह उनके चरित्र की परीक्षा भी लेती है। एक सच्चा नेतृत्वकर्त्ता वही है जो शक्ति प्राप्त करने के बाद भी अपने नैतिक मूल्यों, आदर्शों और समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को नहीं भूलता।

भारत जैसे लोकतंत्र में, जहाँ राजनीति का गहरा प्रभाव है, **शक्ति का समुचित उपयोग और उसका दुरुपयोग दोनों ही देखने को मिलते हैं।** कुछ नेतृत्वकर्त्ता अपनी शक्ति का उपयोग समाज में सुधार और विकास के लिये करते हैं, जबकि कुछ सत्ता के नशे में नैतिकता एवं ईमानदारी को भूल जाते हैं। यही कारण है कि सत्ता में आने के बाद व्यक्ति का चरित्र सामने आता है।

शक्ति केवल राजनीतिक संदर्भ में ही महत्त्वपूर्ण नहीं होती, बल्कि इसका **सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है।** समाज में जिन व्यक्तियों के पास **आर्थिक, सामाजिक या शैक्षिक शक्ति होती है, वे भी अपने चरित्र का परीक्षण कराते हैं।**

(i) आर्थिक शक्ति

धन और संपत्ति की शक्ति व्यक्ति को **सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रभावित** करने का बल देती है। किंतु यह भी देखा गया है कि जैसे-जैसे व्यक्ति के पास धन

आता है, उसकी **जीवन शैली और व्यवहार परिवर्तित** होने लगता है। कई बार आर्थिक शक्ति व्यक्ति को अहंकारी और आत्मकेंद्रित बना देती है, जबकि समुचित चरित्र वाले लोग इस शक्ति का उपयोग समाज सेवा एवं परोपकार के कार्यों में करते हैं। उदाहरण के लिये, भारत में अजीम प्रेमजी ने अपनी संपत्ति का बड़ा हिस्सा परोपकारी कार्यों में लगा दिया, जबकि कई उद्योगपति केवल अपने लाभ के लिये इस शक्ति का उपयोग करते हैं।

(ii) सामाजिक शक्ति

सामाजिक प्रतिष्ठा और शक्ति भी व्यक्ति के चरित्र का परीक्षण करती है। उदाहरण के लिये, **शिक्षक, डॉक्टर और न्यायाधीश** जैसे पेशों में लोग अपने निर्णयों से समाज पर गहरा प्रभाव डालते हैं। यदि उनके पास शक्ति है, तो इसका उपयोग वे समाज के कल्याण के लिये कर सकते हैं, या अपने स्वार्थ और पक्षपात के लिये भी कर सकते हैं।

व्यक्तिगत जीवन में भी शक्ति व्यक्ति के चरित्र का परीक्षण करती है। जब व्यक्ति को अपने परिवार या दोस्तों के बीच अधिकार या शक्ति मिलती है, तो वह अपने व्यवहार से यह दिखाता है कि उसका वास्तविक चरित्र क्या है।

(i) पारिवारिक शक्ति

परिवार के मुखिया के रूप में व्यक्ति के पास शक्ति होती है। यह शक्ति उसे निर्णय लेने और परिवार को दिशा देने का अवसर देती है। यदि मुखिया अपने अधिकार का सही उपयोग करता है और परिवार के सदस्यों के प्रति **दयालुता की भावना रखता है एवं समझदारी के निर्णय लेता है,** तो यह उसके सुदृढ़ एवं नैतिक चरित्र को दर्शाता है। किंतु अगर वह शक्ति का दुरुपयोग कर परिवार के सदस्यों पर अत्याचार करता है, तो यह उसके चरित्र की कमजोरी को दर्शाता है।

(ii) व्यक्तिगत संबंध

व्यक्तिगत संबंधों में भी शक्ति का प्रभाव देखा जा सकता है। जब किसी रिश्ते में एक व्यक्ति के पास अधिक शक्ति या प्रभाव होता है, तो उसका व्यवहार दूसरे व्यक्ति के प्रति उसके चरित्र को दर्शाता है। यदि वह इस शक्ति का उपयोग अपने साथी के कल्याण के लिये करता है, तो यह उसके चरित्र की महानता को दर्शाता है। लेकिन अगर वह इस शक्ति का दुरुपयोग करता है, तो यह उसके स्वार्थी और अहंकारी स्वभाव को उजागर करता है।

शक्ति का सही उपयोग और उसका दुरुपयोग व्यक्ति के चरित्र का वास्तविक परीक्षण है। इसलिये, यह आवश्यक है कि व्यक्ति अपने जीवन में शक्ति के सही उपयोग के लिये **निम्नलिखित सिद्धांतों का पालन करे:**

(i) विनम्रता: शक्ति के साथ व्यक्ति को हमेशा विनम्र रहना चाहिये। विनम्रता व्यक्ति के चरित्र को सुदृढ़ बनाती है और उसे सही दिशा में शक्ति का उपयोग करने की प्रेरणा देती है।

(ii) नैतिकता: शक्ति के प्रयोग में नैतिकता का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। नैतिक मूल्यों के बिना शक्ति का दुरुपयोग होना निश्चित है।

(iii) जवाबदेही: व्यक्ति को अपनी शक्ति के प्रति जिवाबदेह होना चाहिये। जब व्यक्ति अपने कार्यों के परिणामों के प्रति जिवाबदेह होता है, तो वह शक्ति का सही उपयोग करता है।

"लगभग सभी मनुष्य प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं, लेकिन व्यक्ति के चरित्र के परीक्षण के लिये, उसे शक्ति प्रदान करके देखिये" यह कथन हमें शक्ति और चरित्र के बीच के जटिल संबंध को समझने का अवसर प्रदान करता है। शक्ति किसी व्यक्ति के भीतर छिपे हुए गुणों और दोषों को उज़ागर करती है।

जब व्यक्ति शक्ति के साथ **विनम्रता, नैतिकता और जबाबदेहिता** का पालन करता है तब वह समुचित निर्णय ले पाता है। इतिहास और वर्तमान समय दोनों में ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने यह सिद्ध किया है कि शक्ति का सही उपयोग ही वास्तविक चरित्र का परिचायक है।

अंततः शक्ति का वास्तविक उद्देश्य समाज का कल्याण और विकास होना चाहिये, न कि व्यक्तिगत लाभ और स्वार्थ सिद्धि। जो व्यक्ति अपनी शक्ति को इन उद्देश्यों के लिये उपयोग करता है, वही चरित्र का धनी माना जा सकता है।

सभी चीजें व्याख्या के अधीन हैं जो भी व्याख्या किसी निश्चित समय पर प्रचलित होती है वह शक्ति का कार्य है न कि सत्य का।

— फ्रेडरिक नीत्शे

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/nearly-all-men-can-stand-adversity,-but-to-test-the-character,-give-him-power